Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

उत्तररामचरित में चित्रित भवभूति का दाम्पत्य प्रेम (तृतीय अंक के सन्दर्भ में)

डॉ. रेखा गुप्ता
बी.एम. मेमोरियल ककरही किशुनपुर, माडरमऊ, अम्बेडकर नगर (यू॰पी॰)

शोध आलेख सार – भवभूति ने अपने उत्कृष्ट नाटक 'उत्तररामचरित' में जिस दाम्पत्य–प्रेम का वर्णन किया है वह निःस्वार्थ भावना से युक्त है, उसमें कहीं भी स्वार्थ की कालिमा नहीं है। भवभूति ने जिस प्रेम का वर्णन किया है, वह वासना से मुक्त है। राम का प्रेम सीता के प्रति तथा सीता का प्रेम राम के प्रति अन्योऽन्य समर्पण की भावना से युक्त है। महाकवि भवभूति द्वारा प्रतिपादित दाम्पत्य–प्रेम सम्पूर्ण संसार के लिए स्थापित एक उच्च आदर्श है, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणा स्रोत है कि पति–पत्नी यदि किन्हीं कारणवश एक–दूसरे से अलग हो जाएं और उनका प्रेम सच्चा है, तो वह निरन्तर बढ़ता ही जाता है। पति का पत्नी में तथा पत्नी में पति का परस्पर एक दूसरे के प्रति अटूट आस्था तथा विश्वास ही इसका आधार है; जिसको महाकवि भवभूति ने अपने श्रेष्ठ नाटक 'उत्तररामचरित' में बहुत ही सुन्दर ढंग से चित्रित किया है।

मुख्य शब्द – उत्तररामचरित, भवभूति, दाम्पत्य, प्रेम, राम, सीता, नाटक, तृतीय, अंक।

महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य के ऐसे देदीप्यमान नक्षत्र है, जिनकी दूरगामिनी ज्योति काल की विभिन्न बाधाओं को बाधित करती हुई चतुर्दिक प्रसृत होती चली आ रही है। कालिदास जैसे रस सिद्ध कवि के पश्चात् भवभूति का ही नाम संस्कृत साहित्य के नाटककारों में लिया जाता है। यहाँ तक कि कुछ आलोचकों ने कालिदास की अपेक्षा भवभूति को सर्वश्रेष्ठ कवि माना है।

"कवयः कालिदासाद्याः भवभूतिर्महाकविः"

महाकवि भवभूति की तीन रचनाएं 'मालतीमाधव', 'महावीरचरित' तथा 'उत्तररामचरित' है; जिनमें सर्वश्रेष्ठ रचना 'उत्तररामचरित' मानी जाती है। इसमें कवि ने 'रामायण' के 'उत्तरकाण्ड' को वर्ण्य विषय बनाया है; जिसमें कवि ने अपनी मौलिक कल्पना के आधार पर कथानक में कुछ परिवर्तन भी किया जिससे नाटक की परिणति सुखान्त हो जाती है। उत्तररामचरित सात अंकों में निबद्ध है, जिसमें राम के राज्याभिषेक के पश्चात् से लेकर सीता से पुनः मिलन तक की कथा का वर्णन है।

आदर्श प्रेम– भवभूति ने 'उत्तररामचरित' में राम और सीता को एक पुरुष और स्त्री के रूप में चित्रित किया है, जिनका दाम्पत्य–प्रेम लोक–जीवन के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है। उनका प्रेम मानों उनका व्यक्तिगत प्रेम नहीं

बल्कि जन–जीवन की अधिकारिणी है, जो परिवार तथा समाज की मर्यादाओं में चलता हुआ लोकाराधन के लिए अपना बलिदान दे देता है। विवाह से आरम्भ होकर जीवन पर्यन्त बना रहने वाला दाम्पत्य प्रेम समय के साथ लज्जा के परदे हट जाने से और भी प्रौढ़ रूप प्राप्त कर हृदय को अपूर्व शान्ति देने वाला हो जाता है। ऐसा प्रणय सौभाग्य से ही प्राप्त होता है जो सुख और दुःख में एक समान बना रहता है।

एक निष्ठ एवं अनन्य प्रेम– भवभूति के पावन प्रेम–प्रदर्शन की एक विशेषता है–एक निष्ठ एवं अनन्य प्रेम। इस क्षेत्र में वे कालिदास से भी बढ़कर हैं। कालिदास के नाटकों के नायक–दुष्यन्त अग्निमित्र और विक्रम सभी विलासी प्रकृति के रसिक और बहुपत्नीक राजा हैं किन्तु भवभूति के प्रणय नायक एक से अधिक स्त्री से प्रेम करना ही नहीं जानते। सम्भवतः इसीलिए उनके प्रेम में जो तीव्रता तथा वियोग में जो कसक, वेदना और विह्वलता है, वह किसी अन्य नाटकार के नायकों में नहीं है।

भवभूति के राम एक पत्नी व्रतधारी हैं। कवि ने उनके इस अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति सम्पूर्ण नाटक में बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत की है। भवभूति इसी एक पत्नी व्रत पर विश्वास करते है। उनकी कृतियों में सपत्नियों के ईर्ष्या द्वेष के लिए कोई स्थान ही नहीं है।

राम का सीता के प्रति अनन्य प्रेम– शम्बूक वध के उद्देश्य से जब राम पंचवटी जाते है तो वहाँ के दृश्यों को देखकर उन्हें सीता जी का स्मरण हो जाता है। सीता जी के साथ बिताये गये उन स्थलों को बार–बार देखने तथा स्मरण करने के कारण राम को मोहात्मक मूर्छा आने लगती है। राम के ही शब्दों में

अन्तलीनस्य दुःखाग्नेरद्योद्दानं ज्वलिष्यतः।
उत्पीड इव धूमस्य, मोहः प्रागावृणोति माम्।।[1]

(क) पत्नी स्पर्शः सुखद संजीवन सदृश– सीता से अत्यधिक प्रेम का ही कारण है कि राम मूर्छित अवस्था में भी सीता के स्पर्श को पहचान कर कहते है कि क्या मेरे हृदय पर हरिचन्दन के पल्लवों का रस क्षरण हुआ है? अथवा निष्पीड़ित चन्द्र किरणों के नवाङ्कुरों से किया गया सेक है? या सन्तप्त जीवन एवं मन को तृप्त करने वाला संजीवन औषधि रस लगाया गया है।[2]

मुझे जीवन प्रदान करने वाला एवं मन को सन्तुष्ट करने वाला यह निश्चय ही वही पूर्व परिचित स्पर्श है जो सन्ताप–जन्य मूर्छा को दूर करके तुरन्त आनन्द उत्पन्न करके (शरीर में हर्ष जन्य) जड़ता का प्रसार कर रहा है

स्पर्शः पुरा परिचितो नित्यतं स एव,
संजीवनश्च मनसः परितोषणश्च।
सन्तापजां सपदि यः परिहृत्य मूर्च्छा–
मानन्दनेन जड़तां पुनरातनोति।।[3]

वे पुनः कहते हैं कि हे सीते! "स्नेह से आर्द्र तथा शीतल स्पर्श मूर्तिमान् प्रसाद की भांति मुझे तुम्हारा स्पर्श अब भी आनन्दित कर रहा है, परन्तु हे आनन्दायिनी! तुम कहाँ हो?[4] "मेरा हृदय शोकावेग से विदीर्ण हो रहा है परन्तु दो टुकड़ों में विभक्त नहीं हो जाता। शोकाकुल शरीर मोह धारण कर रहा है, परन्तु चेतना को नहीं छोड़ता। अन्तर्दाह शरीर को जला रहा है, परन्तु भस्मसात् नहीं करता और यह मर्म स्थलों पर आघात करने वाला भाग्य प्रहार तो करता है, परन्तु जीवन को नष्ट नहीं करता है–

दलति हृदयं शोकोद्वेगाद् द्विधा तु न भिद्यते,
वहति विकलः कायो मोहं न मुंचति चेतनाम्।
ज्वलयति तनूमन्तर्दाहः करोति न भस्मसा–
त्प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्।।[5]

सीता प्रेम में विह्वल राम नगर वासियों और जनपद वासियों को उपालम्भ देने लगते हैं कि देवी सीता का मेरे घर में रहना आप लोगों को अभीष्ट नहीं था; इसीलिए मैने उसे शून्य वन में तिनके के समान त्याग दिया और शोक भी नहीं किया। (देवी सीता के साथ) अनुभूति यहाँ के ये अनेक पदार्थ मुझे अत्यधिक द्रवीभूत कर रहें है, इसीलिए मैं अब अशरण होकर रो रहा हूँ आप लोग प्रसन्न हों

न किल भवतां देव्याः स्थानं गृहेऽभिमतं तत–
स्तृणमिव वने शून्ये त्यक्ता न चाप्यनुशोचिता।
चिरपरिचितास्ते ते भावास्तथा द्रवयन्ति मा–
मिदमशरणैरद्यास्माभिः प्रसीदत रुद्यते।।[6]

राम सीता के वियोग से इतने व्यथित हो उठते है कि वे स्वयं कहते है कि 'राम इतना अभागा और कठोर है कि अपनी जीवनाधिक प्रियतमा सीता के वियोग में भी जीवित है। इससे अधिक और क्या धैर्य की सीमा हो सकती है। देवी सीता से शून्य हुए इस संसार को बारहवां वर्ष है, उनका नाम भी विलुप्त सा हो गया है, फिर भी क्या राम जीवित नहीं है, अर्थात् जीवित ही है।[7]

(ख) पत्नी वियोगः कष्टदायक अवस्था– पत्नी वियोग में पीड़ित राम अपने कष्टमय अवस्था का स्मरण करते हुए कहते है कि जिस प्रकार हृदय में तिरछा धंसा हुआ, तपाने से लाल शल्य (कील) और विषैला दाँत दारूण यन्त्रणा उत्पन्न करता है, वैसे ही इस असह्य तथा मर्म स्थलों को विदीर्ण करने वाले हृदय में गड़े हुए शोक शल्य को क्या मैंने नहीं सहा? अर्थात् सहा ही–

यथा तिरश्चीनमलातशल्यं प्रत्युप्तमन्तः सविषश्च दन्तः।
तथैव तीव्रोहृदि शोकशंकुर्मर्माणि कृन्तन्नपि किं न सोढ़ः?[8]

राम सीता से कहते है कि चण्डी सीते! इधर–उधर दिखाई तो दे रही हो पर मुझ पर दया नहीं करती?

हा, देवी! तुम्हारे वियोग से मेरा हृदय फटा जा रहा है। देह के बन्धन ढीले पड़ रहे है। मैं संसार को शून्य समझ रहा हूँ। मैं भीतर ही भीतर लगातार जला जा रहा हूँ, मेरी व्याकुल अन्तरात्मा निबिड़ अन्धकार में धंसी जा रही है। मोह मुझे चारों ओर से घेर रहा है। हा! मैं भाग्यहीन अब क्या करूँ–

"हा हा देवि स्फुटति हृदयं, ध्वसते देहबन्धः,
शून्यं मन्ये जगदविरलज्वालमन्तर्ज्वलामि।
सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा,
विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि?"[9]

इतना ही कहते ही वे मूर्छित हो जाते है। वे कहते है कि सीता को परित्याग करने के पश्चात् "राम को नींद कहाँ"? अर्थात् राम की निद्रा भी सीता के साथ चली गयी है।

"कुतो रामस्य निद्रा"?[10]

राम कहते है कि– "पहला वियोग शत्रु रावण के वध के साथ समाप्त होने वाला था, इसीलिए वह इतना दुःखद एवं कठोर नहीं था; परन्तु इस वियोग की कोई अवधि ही नहीं है, इसीलिए यह तो सर्वथा असह्य ही है। इसका कोई प्रतिकार न होने के कारण चुप–चाप सहन करने के अतिरिक्त और कोई उपाय ही नहीं है। इसकी कोई अवधि न होने के कारण आजीवन घुल–घुल कर मरने के सिवाय इस से मुक्ति पाने का कोई मार्ग ही नहीं दिखाई पड़ता।[11]

इससे अधिक आदर्श प्रेम की और क्या बात हो सकती है कि राम 'अश्वमेघयज्ञ' की सहधर्मिणी के लिए वे दूसरा विवाह नहीं करते है, बल्कि पत्नी की जगह सुवर्णमयी सीता की प्रतिमा रखते है–

'हिरण्यमयी सीताप्रतिकृतिः।'[12]

सीता का राम के प्रति अनन्य प्रेम

सीता भी राम से असीम प्रेम करती थी। राम के असहनीय वियोग ने उन्हें अत्यन्त दुर्बल कर दिया था। यथा–हृदय कमल को सुखाने वाला दारूण दीर्घ शोक, उसके डाल से टूटे हुए कोमल किसलय के समान दुर्बल तथा पीले शरीर को उसी प्रकार सुखा रही है, जिस प्रकार कि शरद् ऋतु की कड़ी धूप केवड़े के भीतरी (कोमल) पत्ते को सुखा देती है–

किसलयमिव मुग्धं बन्धनाद्विप्रलूनं,
हृदय कमलशोषी दारूणो दीर्घशोकः।
ग्लपयति परिपाण्डु क्षाममस्याः शरीरं,
शरदिज इव धर्मः केतकीगर्भपत्रम्।।[13]

बारह वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात् भी सीता राम की आवाज को तुरन्त पहचान लेती हैं और तमसा से कहती हैं कि ये आवाज आर्यपुत्र (राम) की है।[14]

जब राम सीता को बार–बार स्मरण करने के कारण मूर्छित हो जाते हैं तो सीता को बड़ा दुःख होता है। वह दुःख से द्रवीभूत होकर कहती हैं कि जो हो सो हो अर्थात् चाहे जो हो–

"यद्भवतु तद्भवतु। यथा भगवत्याज्ञापयति।"[15]

तात्पर्य यह है कि निर्वासित अवस्था में देवी सीता राम का स्पर्श नहीं करना चाहती थीं। उन्हें सन्देह था कि ऐसा करने से राम उन पर क्रुद्ध हो जायेंगे। परन्तु एक आदर्श पत्नी यह कैसे देख सकती है कि उसका पति मूर्छित अवस्था में हो और वह सचेत न करें। यह कैसे सम्भव है?

सीता के स्पर्श से राम की मूर्छा दूर हो जाती है और उन्हें पुनः चेतना आती है। इस परिस्थिति में सीता कहती हैं कि– "इस समय मेरे लिए इतना ही बहुत है अर्थात् मुझ निर्वासित को तो इनके दर्शन में भी सन्देह था, स्पर्श की बात क्या? परन्तु इस समय मैंने इनका स्पर्श भी कर लिया है यही मेरे लिए पर्याप्त है–

"एतावदेवेदानीं मम बहुतरम्।"[16]

सीता राम के वियोग से अत्यन्त दुःखी हैं। उन्हें किसी और का वियोग सहन ही नहीं, वह अपने द्वारा पालित गजपुत्र को आर्शीवाद देती हैं कि वह अपने पत्नी से कभी न वियुक्त हों–

"अवियुक्त इदानीं दीर्घायुरनया सौम्यदर्शनया भवतु।"[17]

भवभूति के अनुसार सच्चा प्रेम वही है, जो बिना कहे ही एक–दूसरे के हृदय की सारी बातें जानता हो (अर्थात् सीता राम के हृदय की बात जानती हैं और राम सीता के)।[18]

सीता राम के विषय में सोचते हुए कहती हैं कि– "हा, दैव! यह मेरे बिना और मैं इनके बिना रहूँगी, इस बात की किसने सम्भावना की थी? या किसने सोचा था?"

"हा दैव! एष मया विना अहमप्येतेन विनेति केन सम्भावितमासीत?"[19]

जब वासन्ती राम से सीता के विषय में पूछती है, तो राम सीता को स्मरण करके अत्यन्त दुःखी होते हैं। यह देखकर सीता कहती हैं कि– "सखि वासन्ति! तू बड़ी ही दारुण और कठोर है जो इस प्रकार प्रलाप करते हुए आर्यपुत्र को अधिक प्रलाप करवा रही है (रुला रही है)–

"सखि वासन्ति! त्वमेव दारुणा कठोर च। यैवं प्रलपन्तं प्रलापयसि।"[20]

वासन्ती राम को बार–बार उन चिर–परिचित स्थानों को दिखाती है, जहां पर राम और सीता एक साथ समय बिताये थे, किन्तु अब इस समय राम के साथ सीता नहीं है, तो राम को अत्यधिक दुःख होता है। राम को दुःखी होते देख सीता को और भी दुःख होता है। वह वासन्ती से कहती हैं कि– "सखि वासन्ति! तू बड़ी कठोर है जो हृदय के मर्म स्थल में उद्घाटित (पकड़े गये) शोक शल्य को बार–बार हिला–हिला कर मुझे और आर्यपुत्र को ऐसे हृदय–द्रावक दृश्यों का स्मरण करा रही हो (अर्थात् बार–बार पुराने प्रसङ्गो को उभार–उभार कर हम दोनों को दुःखाभिभूत कर रही हो)–

"दारुणासि वासन्ति! दारुणासि! या एतैर्हृदयमर्मोद्घाटितशल्यसंघट्टनैः पुनः पुनरपि मां मंन्दभागिनीमार्यपुत्रं च स्मरयसि।"[21]

वासन्ती द्वारा बार–बार उन चिरपरचित स्थानों को दिखाये जाने के कारण राम एक बार पुनः मूर्छित हो जाते हैं। राम को मूर्छित अवस्था में देखकर सीता अत्यन्त दुःखी होकर अन्दर ही अन्दर रोने लगती है। वह अपने कर स्पर्श से राम को पुनः सचेत करती हैं। लम्बे वियोग के पश्चात् सीता के प्रेम से सिंचित आनन्ददायक शीतल स्पर्श, वज्र के लेप से जकड़ा हुआ सा निश्चेष्ट होकर हाथ का अग्रभाग आर्यपुत्र के ललाट से मानो चिपक सा गया हो (अर्थात् प्राणेश्वर के स्पर्श से मेरा हाथ सून्न सा हो गया है)–

"अपसर्तुमिच्छामि। एष पुनः चिरप्रणयसम्भारसौम्यशीतलेन आर्यपुत्र स्पर्शेन दीर्घदारुणमपि झटिति सन्तापमुल्लाघयता वज्रलेपोपनद्ध इव पर्यस्तव्यापार आसंजित इव मेऽग्रहस्तः।"[22]

राम ने सीता का परित्याग किया है, किन्तु सीता राम से कोई भी शिकायत नहीं करती वरन् वह अपने आपको दोष देती हैं कि और किसी ने नहीं, "कठोर हृदया मैंने ही आर्यपुत्र को धोखा दे रखा है–

"भयैव दारुणया विप्रलब्धः आर्यपुत्रः।"[23]

जब भगवती तमसा सीता से चलने के लिए कहती हैं तो सीता कहती है कि आर्यपुत्र के इस दुर्लभ दर्शन को क्षण भर के लिए और देख लू–

"भगवति! प्रसीद! क्षणमात्रमपि दुर्लभदर्शनं पश्यामि।"[24]

सीता अपने पति के इस दुर्लभ दर्शन को अपने सुकृत पुण्यों के फल का लाभ मान रही है क्योंकि सीता को अरण्य में अपने पति के दर्शन होना पुण्य नहीं तो और क्या है? पवित्र आचरणशील जनों से दर्शनीय आर्यपुत्र के चरण कमलों को प्रणाम करके भगवती तमसा के साथ चली जाती हैं–

"नमः सुकृतपुण्यजनदर्शनीयाभ्यामार्य पुत्रचरणकमलाभ्याम्।"[25]

उपसंहार– भवभूति ने अपने उत्कृष्ट नाटक 'उत्तररामचरित' में जिस दाम्पत्य–प्रेम का वर्णन किया है वह निःस्वार्थ भावना से युक्त है, उसमें कहीं भी स्वार्थ की कालिमा नहीं है। भवभूति ने जिस प्रेम का वर्णन किया है, वह वासना से मुक्त है। राम का प्रेम सीता के प्रति तथा सीता का प्रेम राम के प्रति अन्योऽन्य समर्पण की भावना से युक्त है। महाकवि भवभूति द्वारा प्रतिपादित दाम्पत्य–प्रेम सम्पूर्ण संसार के लिए स्थापित एक उच्च आदर्श है, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणा स्रोत है कि पति–पत्नी यदि किन्हीं कारणवश एक–दूसरे से अलग हो जाएं और उनका प्रेम सच्चा है, तो वह निरन्तर बढ़ता ही जाता है। पति का पत्नी में तथा पत्नी में पति का परस्पर एक दूसरे के प्रति अटूट आस्था तथा विश्वास ही इसका आधार है; जिसको महाकवि भवभूति ने अपने श्रेष्ठ नाटक 'उत्तररामचरित' में बहुत ही सुन्दर ढंग से चित्रित किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

[1] भवभूति, उत्तररामचरित, 3/9
[2] तत्रैव, 3/11
[3] तत्रैव, 3/12
[4] तत्रैव, 3/14
[5] तत्रैव, 3/31
[6] तत्रैव, 3/32
[7] तत्रैव, 3/33
[8] तत्रैव, 3/35
[9] तत्रैव, 3/38
[10] तत्रैव, पृ. 259
[11] तत्रैव, श्लोक 3/44
[12] तत्रैव, पृ. 267
[13] तत्रैव, श्लोक 3/5
[14] "भगवति! कि भणस्यपरिस्फुटेति! स्वरसंयोगेन प्रत्यभिजानामि, नन्वार्यपुत्रणैवैत द्वयाहृतम्।" तत्रैव, पृ. 198
[15] तत्रैव, पृ. 202
[16] तत्रैव, पृ. 205
[17] तत्रैव, पृ. 216
[18] 'अहमेवैतस्य हृदयं जानामि, ममाप्यैषः।' तत्रैव, पृ. 208
[19] तत्रैव, पृ. 229
[20] तत्रैव, पृ. 236
[21] तत्रैव, पृ. 250
[22] तत्रैव, पृ. 254
[23] तत्रैव, पृ. 259
[24] तत्रैव, पृ. 267
[25] तत्रैव, पृ. 268